108

अमसालत पुर के चौधरी

अमरनाथ शुक्ल

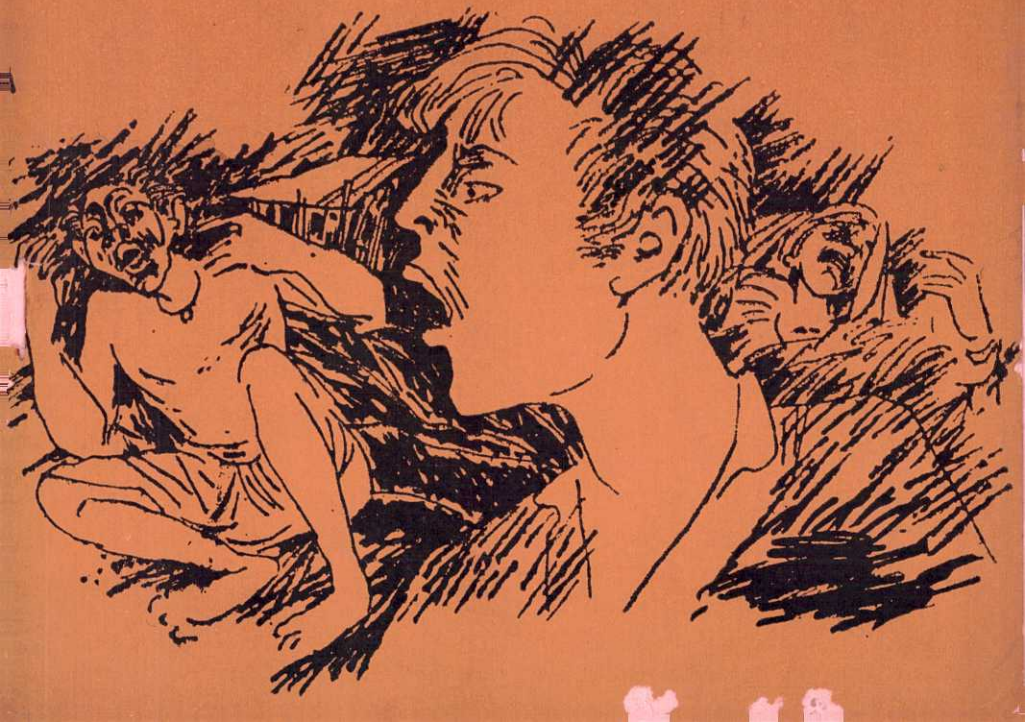

असालतपुर के चौधरी

आज के भारतीय गांवों में फैली
कुरीतियों पर तीखी चोट करने वाला
मर्मस्पर्शी उपन्यास

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

असालतपुर के चौधरी

अमरनाथ शुक्ल

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002
टेलेफोन : 3319282

ग्रन्थांक : 157
©भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : मूल्य : 3.00
पहला संस्करण : 1985

मुद्रक :
शान प्रिंटर्स,
शाहदरा
दिल्ली-110032

अपनी ओर से—

सामने एक जंगल है और हांफता हुआ सन्नाटा। बीच में जंगल के पार जाने के लिए एक ऊबड़खाबड़ रास्ता है। सड़क तो क्या कहेंगे, हां—पतली-सी पगडंडीनुमा एक डगर है। खैर, कुछ भी हो, है तो रास्ता ही—जंगल के पार जाने का !.....

हमारे देश—यानी दुनिया के सबसे बड़े आजाद जनतन्त्र देश—में 'अनपढ़ता' या शालीन भाषा में कह सकते हैं : 'निरक्षरता' एक घना भयावह जंगल ही तो है, जिसे पार करने के लिए आजादी के बाद हम बीहड़ डगर पर लगातार चलते रहे हैं और आगे भी तमाम उलझनों और आपाधापी के बावजूद चलते रहने की हमारी यह इच्छा और कोशिश लगातार जारी है। रही बात इस लंबे सफर में चलते रहने के दौरान सफलता की—तो आंकड़े बोलते हैं कि इस समय हम कहां और किस पड़ाव पर हैं। मानना होगा, और मान लेना भी चाहिए, कि हमारे इस लम्बे सफर की, कुछ अड़चनों और भटकावों के बावजूद एक सही दिशा बराबर बरकरार है। उदाहरण जरूरी ही हो तो, फिलहाल बेझिझक अपने इसी पड़ाव का हवाला देना ही काफी होगा कि आपके हाथों में आयी यह पुस्तक नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित है।

जी हां, इस शृंखला में प्रकाशित आठ नयी पुस्तकें पिछले दिनों भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा 'ऐस्पेबे' के सहयोग से सूरजकुंड में आयोजित लेखक-कार्यशाला में लिखी गई थीं। इस तरह की कार्य-शालाएं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा पहले भी कारगर रूप से

सम्पन्न हुई हैं, लेकिन विषय की विविधता और सर्जनात्मक लेखन की सबरसता के कारण यह सूरजकुंड कार्यशाला सहज ही अनूठी हो गयी। इस कार्यशाला में राजधानी दिल्ली तथा दूसरे शहरों से आए सजग लेखकों ने पूरी हार्दिकता से हिस्सा लिया और राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, महिला शिक्षा, पर्यावरण, ग्रामीण विकास—जैसे विषयों पर खुले मन से लिखा। हमें विश्वास है, उनकी लिखी पुस्तकें नव-साक्षर साहित्य के पाठकों, और प्रशिक्षकों को भी, पूरा सन्तोष अवश्य देंगी।

अंत में, 'ऐस्पेबे' और कार्यशाला में सक्रिय रूप से भागीदार लेखकों के प्रति मैं आभारी हूं।···साथ ही, इस कार्यशाला को सफल बनाने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के सहयोगियों—डॉ० एस० सी० दत्ता, श्री जे० एल० सचदेव और श्री पद्मधर त्रिपाठी को अपना धन्यवाद देता हूं। आमीन !·····

विनम्र

—जे० सी० सक्सेना
महासचिव (अवैतनिक)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

25 दिसम्बर, 1985

असालतपुर
के
चौधरी

असालतपुर के चौधरी

असालतपुर में आज पंचायत जुड़ी थी। गूजर समाज के मुखिया चौधरी धरमपाल के बुलावे पर सब लोग आए थे। आस-पास के दो-एक गांवों के भी प्रतिनिधि आए थे।

यह किसी को पता नहीं था कि अचानक चौधरी साहब ने किसलिए यह बैठक बुलाई है। सब सोचते थे कि अपनी बिरादरी के बारे में कोई बात होगी।

चौधरी साहब ने सब की आवभगत के लिए नाश्ते-पानी तथा हुक्का-तम्बाकू का खूब इन्तजाम किया था।

जब बैठक जम गई तो असालतपुर के ही बुजुर्ग चौधरी धरमपाल से बोले—"धरमपाल ! आज यू बैठक काहे को बुलाई है ? खबर ले जानेवाले से पूछा तो वो बोल्यो, म्हारे को कोई पता नांय। चौधरी साहब ने संदेसो भेजो है कि जा सबतें कह आ कि आज दोपहरी में मिलनी है। अब बोल्यो,

के बात है भाई ?"

धरमपाल मुंह से हुक्के की नली निकालकर बोला—"चौधरी साहब, मुझे तो कछू कहनो नहीं है। अपने महिपाल के समधी वीर सिंह जी आए हैं। वही कुछ कहना चाहते हैं।"

वही बुजुर्ग चौधरी बोले—"तो वीर सिंह अपनी समस्या अपने गांव की बिरादरी में रक्खे। म्हारे को के मतलब ?"

धरमपाल बात काटकर बोले—"चौधरी साहब! मतलब है, इसीलिए तो बुलाया है आप लोगों को। भाई वीर सिंह से सब कुछ सुन लो, फिर फैसला दो कि म्हारे लोगों से मतलब है कि नहीं।"

वही बुजुर्ग चौधरी बोले—"लो भाई वीर सिंह जी, बोल्लो के बात ए ?"

वीर सिंह का समधी महिपाल भी उस पंचायत में बैठा था। उसे कानोंकान यह भनक न थी कि उसका समधी वीर

सिंह उसके ही गांव में बिरादरी के बीच कोई पंचायत जोड़ने आया है।

वीर सिंह आगे बढ़कर आया और अपने सिर की पगड़ी उतारकर पंचों के आगे रखकर बोला—"पंचो! साल-भर पहले मैंने अपनी बेटी कुसुमा की शादी चौधरी महिपाल के बेटे से की थी। आप में से बहुत सारे लोग बारात में गए होंगे। मेरी आवभगत में कहीं कसर रही हो तो आज भी उस शिकायत को मैं सिर माथे लूंगा।..."

वीर सिंह आगे कुछ कहते कि पंचों में से एक बुजुर्ग बोले—"ऐसा मत कहो चौधरी जी! मैंने तो वैसी आवभगत बहुत कम बारातों में देखी है।"

पंचायत में बैठे अन्य कई लोग जो साल पहले उस बारात में गए थे, वे भी उस बुजुर्ग की हां में हां मिलाते हुए बोले—"हां, भाई जी आज भी किसी बारात में जाते हैं तो वीर सिंह के यहां हुई आवभगत की याद आ जाती है।"

वीर सिंह आगे बोले—"बेटी की शादी में मैंने अपनी उसी हैसियत से दहेज भी दिया, पर चौधरी महिपाल ने मेरी बेटी की कैसी गत की, यह आप सब किसी को पता नहीं।"

महिपाल पर यह सीधी चोट, वह भी भरी बिरादरी की पंचायत में! महिपाल तिलमिला उठा और फौरन खड़ा होकर बोला—"वीर सिंह! वह तो हम थे जो तुम्हारी बेटी को इतने दिनों तक अपने घर रख सके। कोई और होता तो एक दिन में निकाल बाहर करता। उसका चाल-चलन ठीक नहीं। अपनी वैसी बेटी को तुम्हीं संभालो। हम अपने बेटे की दूसरी शादी करेंगे। बड़े आये हैं यहां बिरादरी में पंचायत....."

महिपाल की बात पूरी हो इसके पहले ही चौधरी धरम पाल ने महिपाल को डांटते हुए कहा—"महिपाल ! तुम अपनी चौपाल में नहीं बैठे हो कि जो चाहे कहते जाओ। यह बिरादरी की पंचायत है। वीर सिंह को अपनी बात कहने दो। तुम अपने बेटे की दूसरी शादी करोगे या क्या करोगे—यह बाद की बात है। तुमसे जब तक कुछ पूछा न जाए तब तक मत बोलो।"

महिपाल चुप हो गया। धरमपाल ने वीर सिंह से कहा—"चौधरी साहब ! अच्छा हुआ। जो बात मैं कहना चाहता था, वह महिपाल ने ही कह दी। मेरी बेटी के चाल-चलन को उन्होंने बुरा कहा है। औरत को दो कौड़ी का कर देने के लिए उसकी इज्जत पर इसी तरह छींटा कसा जाता है। इन्सान की यह आदत होती है कि वह अपनी गलती दूसरे के सिर थोप कर खुद अच्छा और नेक दिखना चाहता है। इन्होंने शायद आपके गांव में यही फैला रखा है कि लखन-पाल की औरत का चाल-चलन ठीक नहीं और वह घर से चली गई। पंचो ! कोई शक नहीं, कि वह चली गई। वह इनकी बहू थी। वह गई तो इनकी इज्जत जरूर गई होगी, लेकिन इन्हें अपनी उस इज्जत का ख्याल नहीं। जान सब को प्यारी होती है। वह मेरी बेटी है। वह अपनी जान बचा कर अपने बाप के घर चली गई। आज मैं उसे अपने साथ लाया हूं और उसे आप लोगों के सामने पेश करूंगा ताकि आप सब उसका फैसला करो। यह फैसला मैं महिपाल से भी करा सकता था अपनी पगड़ी उनके पांव पर डाल कर अपनी बेटी का सुख तथा उसकी इज्जत वापस मांग सकता था। पर कितने महिपालों के आगे लोग अपनी बेटियों

के मान की भीख मांगते रहेंगे। इसलिए मैं यह सवाल भरी-बिरादरी में ले आया हूं कि क्या हम सब की बहू-बेटियां इसी तरह दुःख झेलती रहेंगी ?"

यह कह कर वीर सिंह उस तरफ बढ़े जहां दूर चौधरी धरमपाल के घर की औरतों के बीच उनकी बेटी कुसुमा सिर झुकाए बैठी थी। वीर सिंह उसका हाथ पकड़ कर पंचायत के सामने ले आए।

चौधरी धरमपाल को यह उम्मीद न थी कि वीर सिंह अपनी बेटी को भरी पंचायत के सामने लाएंगे। क्योंकि कल रात जब वीर सिंह अपनी बेटी को लेकर उनके घर पहुंचे थे और अपनी तथा बेटी की दुःख-भरी कहानी सुनाई तो उनको लगा कि सचमुच अपने समाज में यह बहुत बड़ी बुराई है जिससे सब दुःखी हैं, पर कोई हल नहीं निकल रहा है। इसी-लिए उन्होंने बिना किसी को कोई समस्या बताए यह बैठक बुला ली थी।

वीर सिंह उसी जोश में थे। अपनी बेटी के साथ किया गया सुलूक तथा उसका दुख उनसे बर्दाश्त नहीं हो रहा था। इसलिए कुसुमा के मुंह पर पड़ा पल्ला पलट कर वे बोले —"बेटी ! शरम मत कर। तू आज यहां किसी की बहू नहीं है। मेरी भी बेटी नहीं है। आज इस भरी पंचायत में हमारे समाज की बेटी है। तुम-जैसी बहुत सारी बेटियां और बहुएं आज हमारे समाज में जिस हालत में जी रही हैं तू उनकी प्रतिनिधि है। इसलिए कोई संकोच और लाज मत कर।"

फिर पंचों की ओर मुखातिब होकर बोले—"देखो भाइयो, देखो चौधरियो, देखो पंचो ! अपनी बेटी की यह दुर्दशा देखो। जली हुई लकड़ियों के छाले और मार के

नीले निशान ! इसको यह सौगात देने वाले हमारे चौधरी महिपाल जी हैं। शायद हम लोग अपने ढोर-डंगरों के साथ भी ऐसा सुलूक नहीं करते। इसकी यह हालत बनाने वाले जाने कितने महिपाल अपने समाज में जी रहे हैं। जो औरत हमको जन्म देती है, जो औरत हमारे कुल-परिवार की पीढ़ी-दर-पीढ़ी परम्परा को जीवित रखती है, उसकी यह हालत करने वाले हमारे अपराधों की क्या कोई सजा नहीं ?

वीर सिंह ने एक सवाल उठा दिया। पंचायत में सन्नाटा छा गया। चौधरी धरमपाल बिल्कुल शान्त दिख रहे थे। उन्होंने कुसुमा के सिरे पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेटी, महिपाल के व्यवहार से हम सब लज्जित हैं। पर यह तो बता कि यह तेरे साथ क्यों हुआ ?"

कुसुमा का भी संकोच, लगता था, जैसे छूट गया। बोली, "ताऊ ! कहना तो बहुत कुछ है, पर औरत के चाल-चलन

पर जब अंगुली उठाई जाती है तो लगता है जैसे उसे जीते-जी मार दिया गया। इसलिए पहले मेरे चलन की ही बात ली जाए। हर-एक का चलन अकेला नहीं होता। उसका कोई-न-कोई साथी होता है। एक साल हुए मेरा ब्याह हुए। एक मेरे ससुर चौधरी साहब के सिवा गांव का कोई भी मरद या कोई भी औरत क्या यह कह सकती है! इश्क और मुश्क छिपाए नहीं छिपते। फिर बदचलनी तो एक ऐसे सड़े हुए जानवर की लाश होती है जिसकी सड़ांध हवा पर सवार होकर फैलती है। क्या और कोई भी मरद या औरत ऐसी तोहमत मुझ पर लगा सकती है? यह तो मेरे बापू ने आज मुझे आप लोगों के सामने परदे से बाहर कर दिया, वरना तो आज तक किसी ने मेरा मुंह भी नहीं देखा होगा।"

गांव के मर्द लोग एक साथ बोल उठे—"ना भाई ना! हम लोगों ने तो इस बहू के बारे में कभी कुछ भी न सुना। हमारे घर की औरतें तो अक्सर कोई बात पड़ने पर कहती थीं—बहू तो महिपाल की! ऐसी सलीकेदार बहू हमने ना देक्खी!"

"मेरी सास और ससुर जी की एक ही शिकायत है—दहेज कम लाने की। ननद जी के ब्याह के लिए साल-भर से भटक रहे हैं। उधर से लम्बे-चौड़े दहेज की मांग सुनकर आते हैं तो मुझ पर ताने कसते हैं कि यह क्या लेकर आई थी? और मुझ पर जोर डालते हैं कि मैं अपने बाप के घर से और लाऊं। पहले तो साइकिल से गुजर हो जाता था, पर अब तो टी०वी० दिए बिना ब्याह ही न होगा। जैसे किसी लड़की का ब्याह उससे न होकर उसके दहेज से होता है और किसी की इज्जत उसके नेक कर्मों तथा चाल-चलन से न

होकर उसको कितना दहेज मिला है, इस बात से होती है।..."

कुसुमा ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा—"अब ननद जी के ब्याह के लिए लड़के वालों के लिए ऐसी ही इज्जत आड़े आ रही है तो उसका शिकार मैं हो रही हूं कि अपने बाप के घर से इतना क्यों नहीं लाई। पर मैंने भी कसम खा रखी थी कि चाहे कुछ हो जाए, मैं अब अपने बाप के घर से कानी कौड़ी भी न लाऊंगी! वह चाहे जो होता रहा। मैं बर्दाश्त करती रही। पर वह चाहे जब जान लेने की हद तक पहुंचने लगा तो एक ही रास्ता रह गया कि जिस बाप ने जिन्दगी दी, मुझे पढ़ा-लिखा कर भले-बुरे की पहचान दी, उसी बाप के पास चली जाऊं।"

कुसुमा की यह बात सुन कर सब लोग बहुत दुखी हुए। लगभग सभी लोगों के सामने इस प्रकार की समस्या थी। क्योंकि सभी बेटे-बेटी वाले थे। लेकिन सब अपना-अपना दुःख अकेले-अकेले झेल रहे थे। राजसिंह और उसकी बेटी ने सब के दुख का जैसे साझा कर दिया।

लगता था—जैसे चौधरी धरमपाल की आंखें भर आई हैं। उन्होंने अपनी पगड़ी के फेंटे से आंखों की कोर से छलकते आंसू पोंछे और कुसुमा से कहा—"बेटी! तूने तो ऐसे फोड़े की ओर इशारा कर दिया है जो दुःख तो रहा है, पर उसके फटने का कोई रास्ता नहीं! तू जा उन औरतों के बीच बैठ।"

कुसुमा चली गई। चौधरी धर्मपाल ने कहा—"कुसुमा के आदमी को बुलाया जाए। महिपाल ने जो दोष उस पर लगाया है उसके बारे में उससे पूछना ठीक रहेगा।"

महिपाल ने बैठे-बैठेही धीरे से कहा—"वह घर पर नहीं है।"

एक नौजवान करमसिंह फौरन खड़ा होकर बोला—"ताऊ ! क्यों झूठ बोलो ? लखनपाल खेतों में पानी दे रहा है। खेत कोई दूर तो नहीं। मैं अभी बुला कर लाता हूं।" यह कह कर वह लखनपाल को बुलाने चला भी गया।

करम सिंह दौड़ा-दौड़ा खेत पर गया और बोला—"लखन जल्दी चल। भाभी और उसके बापू आए हैं। पंचायत बैठी है। अपने मुखिया साहब तुझे बुला रहे हैं।"

लखन हाथ-पांव धोकर चल पड़ा और पंचायत में पहुंचा। मुखिया जी ने सारी बातों को बताते हुए पूछा—"बोल लखन ! कुसुमा के चाल-चलन के बारे में तेरी क्या शिकायत है ?"

लखन ने कहा—"ताऊ मैं क्या बोलूं ! बड़े-बुजुर्गों के आगे मेरा मुंह क्यों खुलवाओ। हम नौजवानों की तो मिट्टी खराब है। हम तो आप लोगों के लिए हुंडी हैं। टाइम आने पर इसे

ज्यादा से ज्यादा कीमत पर भुनाया जाए, इसी की ताक हमारे बुजुर्गों को लगी रहती है। दहेज हमें नहीं, आप लोगों को चाहिए। दहेज से इज्जत जो बढ़ती है !—और अपनी उस इज्जत बढ़ाने के लिए बेटी वालों की चाहे जितनी बेइज्जती हो जाए, क्या इसकी किसी को परवाह है। मेरे बापू को मेरी ससुराल से चाहिए, इसके लिए उन्होंने कुसुमा से जो व्यवहार किया वह सब आप देख-सुन चुके हो, पर मेरी बहन की शादी दहेज के चक्कर में नहीं हो पा रही है। मेरा जो बाप मेरी बहन की शादी के लिए दहेज मांग करने वाले को कोसता है, वही चाहता है कि उसकी बहू अपने मायके से और सामान लाए। न ला पाए तो उसके साथ ऐसा व्यवहार कर उसे भगा दिया जाए और मेरी दूसरी का जुगाड़ बनाया जाए। दहेज की ये मांग हम नौजवान नहीं करते। ये सौदेबाजी तो बेटों के मां-बाप की तरफ से होती है। हम इस बारे में कुछ कहें तो मां-बाप से बुरे बनें कि औरत का मुंह देखते ही सब भूल गया जो हमने अपनी जिन्दगी में इसके लिए किया। इसलिए चुप भी रहना पड़ता है। लेकिन जब हालत ऐसी हो गई तो कुसुमा को मैंने ही सलाह दी कि वह अपने मायके चली जाए। वह मेरे कहने से गई थी।"

कई नौजवान एक साथ बोल पड़े—"शाबाश लखन ! शाबाश !! हम सब तेरे साथ हैं। अब तो सरकार ने कानून बना दिया है कि दहेज के मांगने वाले और उसके लिए अपनी बहुओं पर अत्याचार करने वालों को कड़ी सजा मिलेगी। हम यह मामला पुलिस में देंगे। फिर महिपाल चाचा जब जेल में चक्की पीसेंगे और पत्थर कूटेंगे तो उस आटे और पसीने से उन्हें ढेर सारा दहेज मिलेगा।"

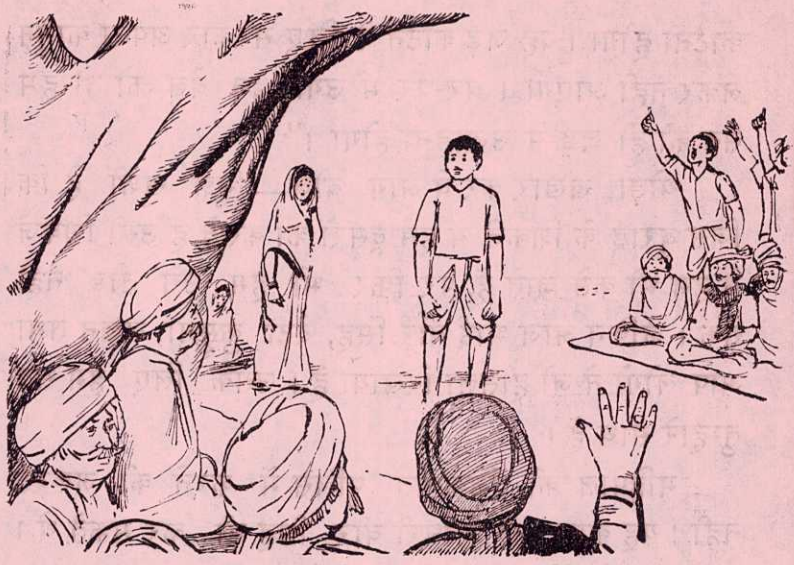

—यह कहते हुए कई नौजवान उठ खड़े हुए और जोर-जोर से नारे लगाने लगे—"महिपाल हाय-हाय ! महिपाल को गधे पर घुमाओ ! महिपाल को जूतों का हार दहेज में दो। इसे पुलिस थाने ले चलो !"

शोर बढ़ता जा रहा था। चौधरी धरमपाल ने देखा कि यह समस्या जोश में दूसरी तरफ मुड़ रही है। उन्होंने खड़े होकर जोर से आवाज लगाई—"मेरे बच्चो ! कितने महिपालों के साथ ऐसा व्यवहार करोगे। अपने इस समाज में कितने ही महिपाल हैं और हो रहे हैं। सरकार के कानून बना देने से यह समस्या नहीं सुलझेगी। समाज में परम्परा से चले आते इस रिवाज और इस बुराई को सरकारी कानून का सहारा लेकर दूर करना बहुत मुश्किल है। समाज में फैली बुराई, जो विषबेल की तरह दिन-दिन बढ़ती जा रही है, इसकी पत्तियां तोड़ने से काम नहीं चलेगा। इसकी तो जड़ों को

काटना होगा। यह जड़ काटने के लिए सरकार अपना कानून लेकर नहीं आएगी। घर-घर में उगी इस बेल को तो हम सब को ही जड़ से उखाड़ना होगा।"

थोड़ा खंखार कर वे आगे बोले—"मुझे खुशी है कि जिस बुराई के शिकंजे में हम दूसरों को कसते हैं उसी शिकंजे में हम भी कसे जाते हैं, पर फिर भी हम उसे तोड़ नहीं सके। लेकिन आज भाई वीर सिंह, बेटी कुसुमा, लखन तथा आप लोगों ने जो हौसला दिखाया है। उसके लिए हम सब तुम्हारे साथ हैं।

महिपाल की शिकायत पुलिस में करने की जरूरत नहीं। यह काम तो चौधरी वीर सिंह भी कर सकते थे। हम लोग जो बैठे हैं और बिरादरी के सामने यह सवाल उठा हैं तो बिरादरी को ही फैसला करना है और वह फैसला यह है—

कि आज से चौधरी महिपाल का अपनी बिरादरी में हुक्का पानी बंद ! हम अपने किसी भी सामाजिक काम में न तो उसे बुलाएंगे और न ही जाएंगे। उसके किसी सुख-दुःख में न तो शामिल होंगे और न शामिल करेंगे। उसके और बेटे-बेटियों का रिश्ता भी अपने समाज में न होने देंगे।

चौधरी साहब की बात खत्म भी न हो पाई थी कि शोर उठा—हम सब को यह मंजूर है !

महिपाल के तो पैरों तले की जमीन ही खिसक गई। वह अपनी पगड़ी हाथ में लेकर चिल्लाया—"दुहाई पंचों की !"

मगर उसकी आवाज उस शोर में दब गई।

इतने में ही वही बुजुर्ग, जिन्होंने शुरू में बात पूछी थी, बोले—"भाइयो, थोड़ी मेरी भी सुनो ! चौधरी धरमपाल ने

तो फैसला दे दिया। यह एक महिपाल की बात हुई। आगे के लिए क्या सोचा ?"

धरमपाल बोले—"चौधरी जी। इसके बारे में भी विचार करके कोई फैसला लेकर के ही उठेंगे।"

थोड़ी देर पंच लोग, कुछ बुजुर्ग तथा नौजवानों ने मिलकर एक मसौदा तैयार किया और जब सब उस पर एक राय हो गए तो धरमपाल बोले—"ले करम सिंह, तू इसे पढ़ कर सब को सुना दे।"

करम सिंह कागज लेकर उठ पड़ा। हाथ उठाकर बोला —"चाचा, ताऊ, भाइयो ! सब लोग सुनो। आज की बैठक में यह प्रस्ताव पास किया जाता है कि—

हम असालतपुर के गूजर समाज के लोग यह प्रतिज्ञा करते हैं कि न तो अपने बेटों के ब्याह में दहेज लेंगे और न ही अपनी बेटियों के ब्याह में दहेज देंगे। इस तरह न तो लेने की अकड़ दिखाएंगे और न ही देने की तकलीफ सहेंगे। लेने-देने का हिसाब बराबर। जो इस फैसले को नहीं मानेगा, उसका सामाजिक बहिष्कार करेंगे तथा अपने समाज में उसका किसी प्रकार का संबंध नहीं रखेंगे।

जिसे यह प्रस्ताव मंजूर न हो, वह बिना किसी संकोच के हाथ उठा दें।"—करम सिंह ने जो नजर दौड़ाई तो देखा कि सारी सभा में एक वीर सिंह का हाथ उठा है।

चौधरी धरमपाल को आश्चर्य हुआ। बोले—"वीर सिंह आप ! आपको ही यह प्रस्ताव मंजूर नहीं ?"

वीर सिंह खड़े हो गए। हंस कर बोले—"हां चौधरी साहब ! मंजूर नहीं है, क्योंकि यह अभी अधूरा है; इसमें कुछ और करना होगा।

"क्या करना होगा ?" धरमपाल ने थोड़ी राहत की सांस ली।

"बात यह है कि हम लोग अपनी ही पाल (गोत्र) में बेटे-बेटियों के रिश्ते तो करते नहीं। इसलिए अपने बेटों की शादी तो भले ही बिना दहेज लिए करोगे पर दूसरे पाल में जब बेटी देने का वक्त आएगा तो क्या करोगे ?" यह बात सुन कर खेड़ा खुर्द, दातारपुर, गोकुलपुर आदि गांव के आए प्रधानों ने कहा—"चौधरी वीर सिंह ने अच्छा सवाल उठाया है। यह समस्या आपके अकेले गांव की नहीं है। हमारे समाज के सब पालों की ही है। हम भी इस प्रस्ताव से सहमत हैं तथा वादा करते हैं कि हम अपने गांवों में भी ऐसे ही प्रतिज्ञा करवायेंगे तथा अपने समाज में जिन-जिन पालों (गोत्रों) में हमारे एक दूसरे से रिश्ते होते हैं उन सब जगहों में जाकर ऐसा ही करेंगे कि वे सब भी ऐसा ही फैसला करें। यह ऐसा फैसला होगा जो एक को इस फंदे से छुड़ाएगा।"

चौधरी धरमपाल बोले—"यह तो बहुत अच्छी बात हमारे गांव में हुई। इस पंचायत का फैसला हमारे पूरे समाज का फैसला हो जाएगा तो आज की यह बैठक खतम की जाए ?"

लोग कुछ जवाब दें कि इसके पहले ही महिपाल अपनी पगड़ी हाथ में लिये दौड़ता हुआ आया पंचों के सामने रखकर बोला—"मुझे पुलिस में दे दो। मुझे सरकारी कानून की सजा भोगने दो। पर समाज की इस सजा से तो लगता है मुझे फांसी ही दे दी गई है। मैं अपने सब गुनाह कबूल पर माफी मांगता हूं।" ऐसा कहता हुआ बहू कुसुमा के पास जाकर

उसने अपनी पगड़ी उसके कदमों में रख दी और कहा, "बहू ! यह मेरी आखिरी गलती माफ कर दे !"

कुसुमा दो कदम पीछे हटती हुई बोली, "बापू जी, यह क्या करते हो !"—कह कर उसने पगड़ी उठा कर महिपाल के सिर पर रख दी।

लोगों ने समझ लिया, कुसुमा ने अपने ससुर को माफ कर दिया।

चौधरी धरमपाल ने महिपाल को अपने पास बुलाया और कहा—"धरती-जैसी क्षमा शील बहू की कदर तुमने नहीं की महिपाल, पर इस बहू ने तुम्हें फिर इज्जत बख्शी है। इस बात को जिन्दगी में मत भूलना। क्यों भाई वीर सिंह जी आपका क्या ख्याल है ?"

वीर सिंह बोले—"इनके बारे में बिरादरी के पंचों ने जो

फेसला दिया है, उस पर एक बार फिर गौर कर लें तो अच्छा रहेगा।"

वही जो सब से बुजुर्ग चौधरी थे बोले—"और क्या करना है, क्यों धरमपाल ? महिपाल की इस पंचायत में अब तक जो छीछालेदर हुई है, वही काफी है। बिरादरी एक बार तो इसे माफ कर ही दे।"

सब लोगों ने कहा—"ठीक है, ठीक है।"

इस तरह असालतपुर के चौधरियों ने सामाजिक स्तर पर एक ऐसा फैसला लिया जो कानूनी फैसले से ज्यादा कारगर हुआ।

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
'शफीक मेमोरियल'
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002